प्रातः सभा 27-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। और कोई है नहीं रूहानी बाप रूहानीबच्चों प्रित समझाने की। सृष्टि तो यही है। बाप को भी यहां आना पड़ता है समझाने के लिए। मूलवतन में तो नहीं समझाया जाता। स्थूल वतनमें हीसमझाया जाता है। बाप जानते हैं बच्चे सभी पतित हैं। कोई काम के न रहे हैं। इस दुनिया में दुःख हीदुःख है। बाप ने समझाया है अभी तुम विष्य सागर पड़े हो। असल में तुम क्षीर सागर में थे। विष्णु पुरी को क्षीर सागरकहा जाता है। अभी सागर तो यहां मिल न सके। तो तालाब बना दिया है। वहां तो कहते हैं दूध की नदियां बहती थी। गईयां भी वहां के फर्स्ट क्लास नामी-ग्रामी होती है। यहां तो मनुष्य भी बिमार हो पड़ते हैं। वहां तोगईयां आद भी कब बिमार नहीं पड़ती है। फर्स्ट क्लास होती है। जनावर आदि भी बिमार नहींपड़ते। यहां और वहां में बहुत फर्क है। यह बाप ही आकर बताते हैं। दुनिया में दूसरा कोई जानताही नहीं। अभीपुरुषोत्तम संगम युग है। जब कि बाप आते हैं सभी को वापस ले जाने। बाप कहते हैं जो भी बच्चे हैं सभी कोई अल्ला, कोई गाड कोई भगवान कोई क्या कह पुकारते हैं। मेरे नाम तो बहुत ही रख दिये हैं। अच्छे बुरे जो आया सो ना म रख दिया। तमोप्रधान बुधि हैं तो नाम भी तमोप्रधान रखते गये हैं। अभीतुम बच्चे समझते हो बाबा आया हुआ है यहां। दुनिया तो यह समझ न सके। समझेंगे वही जिन्हों ने 5000 वर्ष पहलेसमझा है। इसलिए गायन है कोटों में कोऊ। कोऊ में कोऊ। मैं जो हूं जैसा हूं, बच्चों को क्या2 सिखाता हूं वह तो तुम बच्चे ही जानते हो। और कोई समझ न सके। यह भी तुम जानते हो कोई साकार से नहीं पढ़ते हैं। निराकार पढ़ाते हैं। मनुष्य जरूरमुंझेंगे निराकार तो ऊपरमें रहते हैं, वक कैसे पढ़ावेंगे। तुम निराकार आत्मायें भी ऊपर में रहते होना। फिर इस तख्त पर आते हो। यह तख्त(विनाशी) है। आत्मा तो अकाल है। वह कब मृत्यु को नहीं पाता। शरीर मृत्यु को पाता है। यह है चैतन्य तख्त। अमृतसर में भी अकाल तख्त है। वह तख्त तो है लकड़ी का। उन बिचारों को पता नहीं है। अकाल तो आत्मा ही है। जिसको काल खाता नहीं। काल शरीर को खाता है। अकाल मूर्त आत्मारूक शरीर छोड़ दूसरालेती है। उनको यह रथ तो चाहिए ना। निराकार बाप को भी जरूर रथ चाहिए मनुष्य का। क्योंकि बाप है ज्ञान का सागर। ज्ञानेश्वर। अभी ज्ञानेश्वर नाम तो बहुतों के हैं। अपन को ईश्वर समझते हैं ना। सुनाते हैं भक्ति के शास्त्रों की बात। नाम रखाते हैं ज्ञानेश्वर ज्ञानदेने वाला ईश्वर। वह तो ज्ञान सागर चाहिए ना। उनको ही गाड फादर कहा जाता है। मनुष्योंने बहुत नाम रखाये देते हैं। तो सभी मुंझ पड़े हैं। आखरीनभी भगवान है कौन। यहां तो ढेर भगवान हो गये हैं। पत्थरबुधि को भीभगवान कह देते हैं। जब बहुत ग्लानी हो जाती है तब बहुत दुःखी गरीब हो जाते हैं तब ही बाप आते हैं। बाप को कहा भी जाता है गरीब निवाज़। आखरीन वह दिन आता है जो गरीबव निवाज बाप आते हैं। बच्चे भी समझते हैं बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। वहां तो अथाह धन होता है। पैसे कबगिने नहीं जाते। यहां तोहिसाब-किताब निकालते हैं ना। इतने अरब खरब खर्चा हुआ। वहां यह नाम नहीं। अथाह धन रहता है। अभी तुम बच्चों को मालूम पड़ा है बाबा आया हुआ है हमको अपने घर ले जाने लिए। बच्चों को अपना घर भूल गया है। भक्ति मार्गके धक्के खाते रहते हैं। धक्का खाना इसको कहा जाता है। भक्ति है रात। भक्ति मार्ग मेंभगवान को ढूढ़ते ही रहते हैं। परन्तु ढूढ़ने से भगवान को ई को भीनहीं मिलता है। वह समझते हैं वेद-शास्त्र आद पढ़ने सेभगवान मिलता है। परन्तु इन शास्त्र आदपढ़नेसे से कोई को भी भगवान मिलता ही नहीं। अभी भगवान आया हुआ है। यह भी तुम बच्चे ही समझते हो। निश्चय भी है। ऐसे भी नहीं सभी को पक्का निश्चय है। कोई न कोई समय माया भूला देती है। तब ही बाप कहते हैं आश्चर्यवत मेरे को देखन्ती, सुनन्तीऔरों को सुनावन्तो अहो मम माया तुम कितने जबरदस्त हो जो कि भी भागन्ती कराये देती हो। भागन्ती तो ढेर हो जाते हैं। पुनरकती देवन्ती हो जाते। फिर वह कहां जाकर जन्म लेंगे। बहुत हल्का जन्म पा लेंगे। इम्तहान में नापास हो पड़ते हैं ना। यह है मनुष्य से देवता बनने का इम्तहान। बाप ऐसे तो नहीं कहते कि सभी

नारायण बनेंगे। नहीं। जो बहुत पुरुषार्थ करेंगे। बाप समझ जाते हैं कौन पुरुषार्थी है जो औरों को भी मनुष्य से देवता बनाने का पुरुषार्थ कराते हैं। अर्थात बाप की पहचान देते हैं। आजकल आपोजीशन में मनुष्य कितने को भगवान कहते रहते हैं। तुमको अबलाएं समझते हैं। अभी उन्हों को कैसे समझावें कि भगवान आया हुआ है। सिधा कहोकिसको तो मानेंगे नहींकि भगवान आया हुआ है। इसलिए समझाने की भी युक्ति चाहिए। कहेंगे भगवान तो सर्वव्यापी है। वह फिर आवेंगे कैसे। ऐसे तो बहुत ही कहते रहते हैं भगवान आया हुआ है। ऐसे कब किसको कहना नहीं चाहिए कि भगवान आया हुआ है। उनको समझाना है दो बाप है। एक है पारलौकिक बेहद का बाप। दूसरा है लौकिक हद का बाप। अच्छी रीत परिचय देना चाहिए जो जो समझे यह ठीक कहते हैं। बेहद के बाप से वरसा कैसे मिलता हैयह कोई नहीं जानते। वरसा मिलता ही बाप से। और कोई भी कब ऐसे नहीं कहेंगेकि मनुष्य को दो बाप हैं। किसकी बुधि में ही नहीं आवेगा। तुम सिध कर बताते हो। हद के लौकिक बाप से हद का वरसा, और पारलौकिक बेहद के बाप से बेहद का वरसा अर्थात नई दुनिया का वरसा मिलता है। नई दुनिया कहा जाता है स्वर्ग को। सो तो जब बाप आवे तब ही आकर देवे। वह बाप है ही नई सृष्टि की रचना रचने वाला। नई सृष्टि बाप रचते हैं ना। बाकीतुम सिर्फ कहेंगे भगवान आया है। कब मानेंगे नहीं। और ही नुक्ताचिनी करेंगे। सुनेंगे ही नहीं। यह अच्छी रीत समझाना है तुमको मालूम है कि हरेक मनुष्य के दो बाप है। सतयुग में तो समझाना नहीं होता। समझाना तब होता है जब बाप आकर शिक्षा देते हैं। ऐसे2 मनुष्य को समझाओ। वह तो समझते हैंकुत्ता बिल्ला सब में भगवान ही भगवान है। कण2 में भगवान कह देते हैं ना। तुम कहेंगे भगवान आया है तो सुनेंगे नहीं। अच्छी रीत समझाना है। मनुष्य के दो बाप है। एक है आत्मा का बाप दूसरा है शरीर का बाप। उस लौकिक बाप के होते भी उस पारलौकिक बाप को पुकारते हैं। सतयुग में तो उस बाप को नहीं जानते हैं। न याद करते हैं। भक्ति मार्ग में ही याद करते हैं। सुख में सिमरण कोई नहीं करते हैं। दुःख में सभी करते हैं। तो उस पारलौकिक बाप को ही कहा जाता है दुःख हर्ता सुखकर्ता। दुःख से लिबरेट कर गाईड बन कर ले जाते हैं अपने घर। स्वीटहोम। उनको कहेंगे स्वीट सायलेन्स होम। वहां हम कैसे जावेंगे यह कोई भी नहीं जानते। न रचयिता न रचना के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। तुम जानते हो हमारा बाबा अपने निर्वाणधाम ले जाने लिए आया है। सभी आत्माओं को ले जावेंगे। एक को भी छोड़ेंगे नहीं। वह है आत्माओं का घर। यह हैशरीरों का घर। तो पहले2 बाप का परिचय देना चाहिए। वह निराकार बाप है, उनको ईश्वर, भगवान परमपिता भी कहा जाता है। परमपिताअक्षर राईट है। और मीठा है। जरूर भगवान ईश्वर प्रभु कहने से वरसे की खुशबूएं नहीं आती। तुम परमपिता को याद करते हो तो वरसा मिलता है। बाप है ना। यह भी बच्चों को समझाया है सतयुग है सुखधाम। स्वर्ग को शान्तिधाम नहीं कहेंगे। शान्तिधाम जहां हम सभी आत्माएं रहती है। यह बिल्कुल पक्का कर दो। गुरु गुसाई शास्त्र आद तो बहुत ही पढ़े हैं। वह सभी हैं भक्ति मार्ग के गिरने की चीजें। ऐसे और कोई नहीं कहेंगे कि गीता पढ़ते2 तुम उतरते अथवा आये हो। सभी कहेंगे यह तो शास्त्रों की निन्दा करते हैं। बाप भी कहते हैं बच्चे तुमकोउन वेद शास्त्र आद से तुमको कुछ भी प्राप्ती नहीं होती। शास्त्र पढ़ते ही हैं भगवान को पाने के लिए। और भगवान कहते हैं मैं किसको भी शास्त्र पढ़ने से नहीं मिलता हूं। मुझे यहां बुलाते ही हैं कि आर पतितदुनिया से पावन दुनिया स्वर्ग बनाओ। इसलिए मैं एक ही वार आता हूं। मुझे बुलाते ही हैं नर्क में कि आकर स्वर्ग का मालिक बनाओ। यह बातें भी कोई समझते नहीं हैं। पत्थर बुधि है ना। हमको पत्थर2 मेंकहते खुद ही पत्थर बुधि बन गये हैं। स्कूल में बच्चे नहीं पढ़ते हैं तोकहते हैं ना तुम तो पत्थर बुधि हो। सतयुग में ऐसे भी नहीं कहेंगे। यह सभी बाप बैठसमझाते हैं। पारस बुधि बनाने वाला है ही परमपिता परमात्माबेहद का बाप। लौकिक बाप से तो पत्थर बुधि ही बनते जाते। इस समय तुम्हारी है पारस बुधि। क्योंकि तुम बाप के साथ हो। फिर सतयुग में तुम्हारी एक जन्म में भी इतना जरा फर्कजरूर पड़ता है। 250

वर्ष में दो कला कम हो जाती है। सेकण्ड व सेकण्ड। 250 वर्ष में कला कम होती जाती है। एकदम परफेक्ट जीवन तुम्हारी इस समय की है। जबकि तुम बाप के मिसल ज्ञान का सागर, सुख का सागर शान्ति का सागर पूरा बनते हो। सभी वरसा ले लेते हो। बाप वरसा ही देने आते हैं। पहले2 तुम शान्तिधाम चले जाते हो। फिर सुखधाम में जाते हो। शान्तिधाम में तो है ही शान्ति। फिर सुखधाम जाते हो। वहां भी अशान्ति की जरा भी बात नहीं रहती। फिर नीचे उतरना होता है। मिनट व मिनट तुम्हारी उतराई होती है। सेकण्ड व सेकण्ड नई दुनिया से पुरानी दुनिया होती जाती है। तब ही बाबा ने कहा था हिसाब निकालो, 5000 वर्ष में इतने मास, इतने दिन, इतने घंटे, इतने मिनट, इतने सेकण्ड होते हैं। तो फिर बाबा छपावेंगे। मनुष्य वन्डर खावेंगे यह हिसाब तो पुरा बताया है। एक्युरेट हिसाब निकालना चाहिए। उसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता। मिनट व मिनट अिव2 होती रहती है। सारा रील फिरता है रील होता जाता है। फिर वही रिपीट होगा। यह स्वेज रील, बड़ा ही वन्डरफुल है। इनका माप आद नहीं कर सकते। सारा दुनिया का जो पार्ट चलता है, टिक2 होती रहती है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। यह चक्र फिरता ही रहता है। वह होता है हद का ड्रामा। यह आगे तुम कुछ नहीं जानते थे। मनुष्यों को यह पता नहीं है कि यह अविनाशी ड्रामा है। बनी बनाई ... जो होना है वही होता है। नईबात नहीं होती। अनेक वार सेकण्ड व सेकण्ड ड्रामा रिपीटहोता रहता है। और कोई बातें यह समझा नहीं सकते। पहले2 तो बाप का परिचय देना है। बेहद का बाप बेहद का वरसा देते हैं। उनका एक ही नाम है शिव। जैसे आत्मा का एक नाम आत्मा है ना। भाषाओं में फिर और2 नाम कहते हैं कोई सोल कहते, मुसलमान लोग रूह कहते। चीज़ तो एक ही है आत्मा। वह है परमआत्मा माना परमात्मा। तुम बच्चों को राज यह सभी बातें समझाते रहते हैं। बाप कहते हैं मैं आता ही तब हूं जब अति धर्म की ग्लानी होती है। इसको कहा जाता है घोर कलियुग। बहुत दुःख है यहां। कहते हैं ऐसे घोर कलियुग में पवित्र कौन रह सकते। बाप भी कहते हैं कोई रह न सके। परन्तु उन्हों को यह पता नहीं है इन्हों को पावन बनाने वाला कौन है। बाप ही संगम युग पर आकर पवित्र दुनिया स्थापन करते हैं। वहां स्त्री पुरुष दोनो ही पवित्र रहते हैं। यहां दोनो अपवित्र हैं। यह है ही अपवित्र दुनिया। वह है पवित्र दुनिया। स्वर्ग हेवनि। यह है दोजख, नर्क। हेल। तुम बच्चे तो समझ गये हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। समझाने में भी मेहनत है। गरीब झट समझ जाते हैं। दिन प्रति दिन बृधि होती जावेगी। फिर मकान भी इतना बड़ा होगा। बैठने लिए हाल भी बड़ा चाहिए ना। वह भी जरूर बनाना पड़े। इतने बच्चे आवेंगे क्योंकि बाप तो अभी कहां जावेंगे नहीं। आगे तो बिगर कोई केकहे भी बाबाआपे ही चले जाते थे। बम्बई देहली आद तरफ आद से परिक्रमा दे आये हैं। अभी तो बहुत बच्चे यहां आते रहेंगे। ठंढी में भी प्रोग्राम बनाना पड़ेगा। फ्लाने2 समय आओ तो फिर भीड़ नहीं होगी। सभी इकट्ठे एक ही समय तो आ न सकें। बच्चे बृधि को पाते रहेंगे। बच्चे ही कहते हैं बाबा अभी तो एक बड़ा हाल बनावें। यहां छोटे2 मकान बच्चे बनाते हैं। वहां तो ढेर महल होंगे। यह तो तुम जानते हो आठ वर्ष बादपैसे तो सभी मिट्टी में मिल जावेंगे। किनी दबी रहेंगी धूल में.... मनुष्य छिपाने लिए खड्डे खोद की भी अन्दरख देते हैं। ऐसे तो बहुत करते हैं। या तो चोर ले जाते हैं। खड्डों में भीअन्दर रह जाते हैं। फिर खेती करने समय धन निकलता है। अभी विनाश होगा सब दब जावेंगा। फिर वहां तो सभी कुछ नया मिलेगा। बहुत ऐसे राजाओं के किले हैं। जहां बहुत सामान दबा हुआ है। फिर गवर्मेन्ट कहती है ठिका उठाओ। जो निकले तो आधा तुमआधा हम उठावेंगे। खर्चा तुम्हारा। फिर निकले न निकले तुम्हारे तकदीर पर। न भी निकले। कहते हैं यहां हीरे निकलेंगे। फिर न निकले तो आधा तुम्हारा आधा गवर्मेन्ट का। फिर नीलाम होते हैं। बड़ा2 हीरा भी निकल आता है। तो हजारों लाखों की आमदनी हो जाती है। ऐसे नहीं कि स्वर्ग में तुम ऐसे खोद कर निकालेंगे। नहीं। वहां तो हर चीज की खानियां आदसभी नये भरपूर हो जावेंगे। यहां तो कलराठी जमीन है। तो ताकत ही नहीं है। बीज जो बोते हैं उन में दम न रहा है। किचड़पट्टी अशुध चीज डाल देते हैं। वहां तो अशुध चीज का कोई

नाम नहीं होता। एवरी थींग न्यू होताहै। स्वर्ग का सा० भी बच्चियां कर के आई हैं। परन्तु यहां तो वह चीज़ आद कुछ बनान सके। वहां की ब्युटी ही नेचरल है। कृष्ण का जन्म कैसे होता है वह भी बच्चों को सा० कराया था। सारा कमरा ही लाईटमय हो जाता है। कोई तकलीफ नहीं। मक्खन से वार हो जाता है। नर्स आगे खड़ी होती है। झट बच्चे को गोद में उठा लेती है। कायदे अनुसार बच्चे को खाना दूध आद मिलता है। कृष्ण की कितनी महिमा है। घोरे से फिर सांवरा कैसे बनते हैं यह भी कोई नहीं जानते हैं। अभी बाप ने तुमको समझाया है। एक नीलकंठ महादेव का भी मंदिर है। मनुष्य समझते नहीं है ऐसा मंदिर क्यों बनाया है। रघूनाथ के मंदिर में भी राम को क्यों काला बनाया है कोई समझते थोड़े ही हैं। जगदम्बा का मंदिर भी बनाते हैं। समझते थोड़े ही हैं। जगदम्बा वही फिर ल० , जगत की महारानी बनती है। काली कलकत्ते वाली है ना। उनकी कितनी पूजा होती है। उनको भी जगतअम्बा कहते हैं। परन्तु ऐसे काली कोई होते थोड़े ही हैं। भक्ति मार्ग में कैसे2 चित्र आद बना दिये हैं। क्या बल चढ़ाते हैं। आगे तो मनुष्य की बल चढ़ाते थे। अभी बकरी की बल चढ़ाते हैं। मनुष्य को बल चढ़ाना, इसको महाप्रसाद कहते थे। अर्थ कुछ नहीं। इसको कहा जाता है अन्धश्रधा। गीता में भी है ना अंधे के औलाद अंधे। परन्तु मनुष्य यह भी नहीं समझते कि अंधे का अर्थ क्या। बच्चे समझते हैं आज कितनी बड़ी दुनिया है। कितने मनुष्य हैं। बल बाकी कितने होंगे। तुम अभी संगम पर हो। उस तरफ है स्वर्ग नई दुनिया। इस तरफ है नर्क पुरानी दुनिया। अभी कलियुग है। सतयुग आने वाला है। यह भी किसकी बुधि में नहीं आता है कि इतने ढेर मनुष्य हैं, यह सभी कहां जावेंगे। कहते भी हैं विश्व में शान्ति हो। बाप कहते हैं बताओ विश्व में शान्ति किस प्रकार के चाहते हो। ऐसी चीज़ें कब देखी है? किसको पता ही नहीं। अभी कलियुग है। जरूर कलियुग के बाद फिर सतयुग आवेगा। सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होते हैं। कलियुग में क्या है। इसी बीच भगवान को आना पड़ता है। जो अनेक धर्मों का विनाश, एक धर्म की स्थापना करे। त्रिमूर्ति भी है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना। परन्तु कोई समझते ही नहीं। बड़ी मेहनत करनी पड़ती है। कोटों में कोई ही निकलते हैं। बाप कहते हैं तुम थको मत। मेहनत करते रहो। फिर अन्त मते सो गति हो जावेगी। तुम्हारी मेहनत सफल होगी जरूर। इस दुःखधाम को भूलते जाओ। कल्प2 बाप ऐसे ही आकर समझाते हैं। बाप इस संगम युग पर ही आकर नई दुनिया की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश करते हैं। कितना सहज है समझाने का। अच्छा। बाप बच्चों को कहते हैं घेराव डालते जाओ। कहेंगे बाबा खर्चा होगा। अरे खर्चा का तुम क्यों ख्याल करते हो। बाप डयरेक्शन देते हैं ना। ख्याल भी न आना चाहिए किपैस कहां से आवेंगे। म्युजियम को बनाने में एक मास लगते हैं। मकान अच्छा हाथ में हो। गरीब ही आवेंगे। सीखेंगे। पेट भी मिलेगा। बाप कहते हैं मैं भी गरीब निवाज़ हूं। गरीब ही लेंगे। साहुकार जागेंगे परन्तु देरी से। नहीं तो कहेंगे भगवान साहुकारों पिछाड़ी ही पड़ते हैं। बाप है ही गरीब निवाज। भारत कितना साहुकार था। अभी गरीब हैं। फिर बाप साहुकार बनाते हैं। अभी जो अपन को स्वर्ग में समझते हैं वह है नर्क में। भल उन्हों को स्वर्ग में रहनेदो। तुम बच्चों को तो अन्दर में बड़ी खुशी रहना चाहिए। यह तो पुरानी छीछी दुनिया है। इस दुनिया में कपड़े पहने, सुख लेवे ख्याल भी न आना चाहिए। इसको कहा जाता है इच्छामात्रम अविद्या। इच्छा तो एक ही रखनी है हमको अपना राज-भाग चाहिए। जो गंवाया है। हम ही विश्व के मालिक थे। अपने ही तन-मन-धन से सेवा कर राजाई ली थी। भीख नहीं मांगनी है। तुम हो पावन। तो पतित मनुष्य बिघ्न डालते हैं। तुम्हारा तो योगबल ही नामी-ग्रामी है। जिससे हेविन स्थापन होता है। तुम जानते हो स्वर्ग की स्थापना कैसे हुई थी। हेवनि है वन्डर ऑफ दी वर्ल्ड। वह माया के सात वन्डर्स दिखाते हैं। ईश्वरीय वन्डर एक है सब से जास्ती। यह सभी धारणा करनी है।

बाप के बच्चे हैं-अन्दर हर्षित भी होना है। इन बातों को भूलना न चाहिए। घर में चलन भी बड़ी अच्छी हो। नहीं तो निन्दा कराते हो। कहेंगे इनको भगवान पढ़ाते हैं। निन्दा कराने वाले ऊंच पद पा नहीं सकते। सद्गुरु का निन्दक ठौर न पाये। क्योंकि सद्गुरु के बच्चों को एमआब्जेक्ट का पता है। उन गुरुओं के फालोअर्स को तो कोई एमआब्जेक्ट ही नहीं। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।